बाबाजी की अमर कथा

छठा अध्याय

''जय बाबे दी''

गोरखनाथ जी कि मण्डली में से उनका एक चेला बाबाजी की तलाश करने के लिये उडाई मार कर बाबाजी को ढुढने गये। परन्तु बाबाजी पौणाहारी (पवनरूप तथा अन्न जल का त्याग करने वाला) थे यह भरतरी को नजन नहीं आया। धौलगीरी पर्वत कि उची चोटी पर चरण लगें।

जिसे लोग आजकल चरण पादिका का मन्दिर कहते है इस चोटी के नीचे एक गुफा है। इस गुफा में एक बहुत बडा राक्षस रहता था । वह बाबाजी को देखकर कहने लगा ''यह घर मेरा है'' बाबाजी ने कहा ''यह गुफा साधु–सन्त तथा महात्मा पुरूषों को भजन करने योग्य स्थान है तू यहॉ नहीं ठहर सकता'' बाबाजी व राक्षस का बहुत बडा ज्ञान रूपी झगडा होता रहा अन्त में राक्षस बबाजी कि शक्ति देखकर शरण मे आ गया और कहने लगा ''प्रभु, आप मुझे अपना दास बना लो, परन्तु मुझे यहॉ से मत निकालो'' बाबाजी ने दयारूप होकर कहॉ ''लो, आज से तुम गुफा के पहरेदार के रूप मे रहना'' और बाबाजी ने उसे वचन दिया कि मेरी गुफा पर बहुत दुर–दुर से भक्तजन अपने कष्टों को दुर करने के लिय आयेगे।

जिस किसी भी भक्त पर उपरी कसर होगी, उसे आप खत्म कर दोगे। यहॉ जो मेरे भक्त आयेगे, जो हमारे लिये रोट प्रसाद लाया करेंगे और तुम्हारे लिये कुदनू (बकरा) भेंट लाया करेगें। मेरे दरबार पर कुदनू कि बली नहीं चढेगी, तुम्हारी भुख सिर्फ कुदनू कि सुगन्ध से ही मिट जायेगी । यह वचन राक्षस ने स्वीकार कर लिया। चैत में हमारे दरबार पर बडा भारी मेला लगेगा तथा जिसे भी मै लाल बख्सूँगा, वह मेरे दरबार पर कुदनू चढायेगा। राक्षस से किये वचन द्वारा प्रेमी भक्त जन बाबाजी के लिये रोट प्रसाद भेट लाते है। वह राक्षस के लिये कुदनू भेट करते है। बहुत प्रेमी भक्त गण मण्डलीयों के साथ शान्दार झण्डे बनाकर लाते है जो झण्डे बाबाजी के मन्दिर तथा गुफा पर खुब लहरा रहे है।

बाबाजी के ये वचन सुनकर राक्षस गुफा के बाहर पहरेदारी करने लगा तथा बाबाजी गुफा के अन्दर प्रभू भक्ति में लीन हो गये । तभी राज भरतरी ढूढते–ढूढते गुफा के बाहर आ गये और बाबाजी को गुफा से निकालने के लिये हर सम्भव कोशिंश करने लगें । जब भरतरी सारी कोशिश करके हार गये तो उसे सोचा कि जो बालक मेरे गुरू को अपनी शक्तियों से हरा सकता है उसे भला मै कहॉ हरा पाउगा। यह सोचकर भरतरी ने बाबाजी कि गुफा के बाहर बाबाजी से प्रार्थना कि ''हे बालक नाथ, मै आपको अपनी गुरू बाना चाहता हूँ'' यह सुनकर बाबाजी गुफा से बाहर आये और भरतरी से काहॉ ''नहीं भरतरी गुरू तो तुम्हारा गोरखनाथ ही रहेगा । चुकिं मै यहॉ अकेले तपस्या कर रहा हूँ, यहॉ मेरा कोइ साथी नहीं है आज से मै तुम्हे अपना साथी बनाता हूँ। आज से हम दौनो प्रभु भक्ति इक्ठ्ठे करेगें'' ।

बाबाजी कि उदारता देखकर भरतरी जी बाबाजी के चरणों में पड गयें कि मै तो आपका चेला बनने के लिये आया था, आपने मुझ पर कृपा कर के मुझै अपना साथी बना लिया। बाबाजी ने राज भरतरी को यह वचन

दिया जिस घर मेरी पुजा होगी वहॉ पर तुम्हारे नाम के भी जय कारे लगाये जायेगे और बाबाजी ने राज भरतरी को अपनी गुफा से उंचा स्थान दिया। जहॉ आज संगतो के लिय भण्डारे लगते है।

जब गोरखनाथ ने देखा कि राज भरतरी भी बाबाजी के साथ वहीं रह गया है तो वह अपनी सम्पूर्ण मण्डली लेकर गुफा कि ओंर चल पडा । बाबाजी कि गुफा के बाहर पहुॅचकर गोरखनाथ ने वहॉ धूना प्रज्वलीत किया और अपनी सम्पूर्ण शक्ति के द्वारा बाबाजी को गुफा से बाहर लाने कि कोशीश कि, परन्तु जब बाबाजी फिरभी बाहर न आये तब गोरखनाथ ने हाथ जोड कर बाबाजी से प्रार्थना कि की आप कोई मानव रूप न होकर कोई देव शक्ति हों । मै आपसे हार मानता हूॅ और मैं अपनी जीवन लीला यही पर समाप्त कर रहा हूॅ।

लेकिन इससे पहले मै आपके सम्पूर्ण रूप के दर्शन करना चाहता हूॅ गोरखनाथ के इतना कहते ही बाबाजी अपने सम्पूर्ण रूप ''शिवरूप'' बन कर गुफा से बाहर आये और गोरखनाथ को दर्शन दिये । गोरखनाथ ने जब शिव रूप बाबाजी को देखकर तो धन्य–धन्य हो गया ।

जब बाबाजी ने गोरखनाथ से कहॉ कि ''हे गोरखनाथ, अगर मैं तुम्हें खत्म करना चाहता तो शाहतलाई में ही खत्म कर देता, लेकिन मै तुम्हारा अहंकार तोडना चाहता था चूंकी तुमने प्रभु कि बडी भक्ति की है और तुम्हारे द्वारा कलयुग में लाखों लोगों का उद्धार होगा इस लिये जाओ गोरखनाथ जाकर अपना स्थान सम्भालो तब गोरखनाथ ने बाबाजी से कहॉ कि हे प्रभू जहॉ–जहॉ भी तुम्हारे नाम की पूजा होगी, वहॉ पर मेरे नाम की गालियॉ मिलेंगी । लेकिन बाबाजी ने गोरखनाथ को वचन दिया कि गोरखनाथ जहां–जहां भी मेरे नाम की पूजा और कीर्तन होगे वहां तुम्हारे नाम के भी जय कारे लगाये जायेंगे । यह कह कर बाबाजी वहॉ से अदृश्य हो गये । कुछ समय बाद बाबाजी से आज्ञा पाकर भरतहरी अलवर नगरी को (राजस्थान) चले गये । अलवर में एक गुफा है भरतहरी वहां पर अपना आसान लागाकर प्रभु भक्ति में लीन होकर अमर हो गयें ।

''बोलो सांचे दरबार की जय''

''जय बाबे दी''